अध्याय ३ : भवाई लोकनाट्य का सामान्य परिचयः

भवाइ का अर्थः

गुजरात का लोक नाड्य भवाई है। भवाई कृत ही पुरानी भारतीय नाट्यपरंपरा से है। 'नाट्यदर्पण'

'भावप्रकाशन' और 'साहित्यदर्पण' में प्रेक्षळक तरीके से नाट्यस्वरुप का वर्णन है वह भवाई के स्वरुप से मीलता है।

भवाई के लिए '^mdZ'शब्द के साथ जोडा जा सकता है। रसिकलाल परिख "भावाई" वह अंबेमाता ना मंदिर मां थतुं भावन अर्थात् वाद्यो साथेनुं गीत नृत्य सहित नुं स्तवन" (१) डॉ.हरिवल्लभ भायाणि ने तेरमी सदी की " सावचधम्म दोहा नाम की कृति में ' भावन' शब्द मीलता है। जीसका अर्थ होता है। भपको, शोभा, सजाई, सजावट। 'कान्हडदे' प्रबंध में से 'भवाडवुं' शब्द मीलता है जीसका अर्थ है। दीपाववुं, शोभा वधारवी आदि है। यह देखकर 'भवाइ' यानी 'भपका' या सजावटवाळी भजववानी विशिष्ट रचना" ऐसा अर्थ ग्रहित है। मूल संस्कृत शब्द ' रासन' से रसोई शब्द आया उसी तरह भवानी (शक्ति) के भावन में से (भवाई) शब्द नीकला होगा।

भवः संसार + आई : जगदंबा

भू : थवुं होवुं

भवपति : थइ रह्युं छे.

भवाई यानी । भव–वही अर्थ होता है।

भव + आई : भवाई यहाँ पर अर्धनारीश्वर शिव और शक्ति के नाम से भवाई होती है। भव यानी शिव और आई यानी भगवती पार्वती या रात्री रचणणा.

डॉ.अमृतलाल पटेल ने भवाई की परीभाषा देते हुए कहाँ है कि "भवाई नी उत्पत्तिनो ईतिहास तो कईक जुदोज छे. जे हेमाळा पटेल साथे जोडायेलो न होवा करतां समग्र पाटीदार समाज साथे जोडायेलो छे।"(२) नाटक में सर्जन की वैविध्य के लक्षण के कारण सुत्रधार को 'भाव' कहा। उसके उपर से भावयती यानी नई सृष्टि को उत्पन्न करना हुवा और भावयति के उपर से प्रकृति भवाई शब्द बना होगा। जीस प्रदेश में आई का औं उच्चारण होता है वहाँ यह रुप है। भाई का भै फोई का फै भवाई का भव जहा बोलते है वहाँ के जो मूल आ 'होणैया' 'धेंरैया', 'भवैया' शब्द है। वह सौराष्ट्र में 'अैयो के बदले' 'आयो' बोलते है। वहाँ 'भवायो' उच्चारण मीलता है।

भवाई का अर्थ विस्तार

१. 'भव'करवो यानी 'वेश भजववो' यह शब्दकोश में अर्थ मीलता है।

२. 'भाव – भजववो' यानी किसी के पास जो भूमिका करने की अपेक्षा होती है वह पूरी करता है।

३. जैसी भावना वैसी सिध्दि।

४. पात्र करनार पात्र की भूमिका को अपने चित्र में ध्यानेनी मूर्ति वह 'भाव' वैसी भूमिका करना वह 'भाव' भजववो, 'वेश'नी भजवणी ।

भावनी भजवणी

भावनी भवाई

भवाई

भवाडवुं यानी शोभाववुं और 'भवाई' यानी 'शोभा'

एक मत ऐसा है कि 'भव' को 'आ' अथवा 'आनी' लगाने से स्त्रीवाचक 'भवा' अगर 'भवानी' थाया शक्ति पुजनाराओ अे, भव ने आई लगाडता भवाई शब्द प्रयोजायो

अेटले के जेना वडे शक्तिपूजानां गुणगान भजवाय ते भवाई। 'भव' अेटले शिव अने आई अेटले शक्तिमाता अथवा तो भवा अेटले शक्तिने अेना गुणगान ने वडे थाय तेनुं नाम 'भवाई' पड्युं अन्य मत मुजब 'भव'अेटले 'संसार'। तेना परथी संसारलीला नु अनुकरण ते 'भवाई'(२)

संसारलीला के बदले संसार की 'वही' यानी संसार का आलेखन माननें वाले 'भवाई' की उत्पत्ति 'भव – वही' में से हुवा मानते है । वही का अेक अर्थ जमाउधार भी होता है पर वहीं बारोट के चोपडे में हंमेशा जमा पासुं यानी यजमान के गुणानुराग विशेष होता है। 'भव वही'विशे नजदिक में भूतकाल में एक कुंडणियो बोलते है।

'संवत तेरसो मांहि, देवी बहुचर पर दिधो

भववही संग्रह ग्रंथ, कोई रचता कर लीधो'।

ठाकर आशाराम, गोर कणबी जन केराः

विविध जातिना वेश भजववा रच्यां भलेरा।

आश्रित देवी कुळ कणबीना

जुगते असैत अे भणीअे

जगदंबा सहाय शुभ जहेने

विगते वात वखाणीअे.(३)

हरिलाला ध्रुवे भवाया की व्युत्पति। भव–शिव और भाव– सूत्रधार से बताई है।

नरसिंहराव दिवेटया की यह पहली व्युत्व्यति से असंभवित बताने के लिए लिखा. 'संस्कृत नाटको मां प्रचलित शब्द भव हाल भवाई जेवा, नाटक थी केवल भिन्न अने अधम खेलमां प्रवेश पामे अे संभवतुं नथी,' (४)

जय शंकर (सुंदरी) 'भववही' से भवाई बना।

डॉ. सुधाबहन देसाई का तारतम्य ऐसा है कि भवाई में रहे नाम को सूचन की तरफ किसिका ध्यान गया नहिं है। भवाई के जनक असाईत के पुत्र मांडण नायक ने जीतने वंशो को जोडा है। उसमें भावन शब्द

आता है।

“मांडण नायके भावन जोड्या ”

तेना बोल बे चार –

किस तारी तेनथी रे,

पहोंची समंदर पार

वहेता घेर आवजो झंडा (५)

उपरांत भवाई के पुस्तक में यह निर्देशो मीलते है। “भावन त्रीसु आवुना धळीनुं भावन द्वारका ना धणीनुं भावन, ठोलातु भावन पुरुं थयुं भावन वगेरे।”(६)

यहां से सुधाबहन देसाई ऐसा अभिप्राय पर आते है कि भाव पर से भावना हुआ। जैन के देरासर में उत्सव के समय गीत नृत्य द्वारा पुजा होती है उसे ‘भावना’कहते है। ‘भावना’ उपर से ‘भावन’हुवा। भावन यानी भक्ति अथवा गुळगान अथवा लीला विस्तार ‘भावन’भजवे वह भावक–भवरयो भवईयो जो भजवे वह भवाई।

हरिवल्लभ भायाणी ने भवाडवुं शब्दप्रयोग की तरफ ध्यान खीचां है। के का शास्त्री ने ‘नरसै महेताना पद’का संपादन किया है। उनकी पद की पंक्ति में।

“नंदनवन मां वाले रास रमाड्यां

सफल सुंदरीमां वाले भला रे भवाड्यां।” (७)

यह पंक्ति में ‘भावाड्या’शब्द का अर्थ बनाव्यां कर्या उतना ही नही परंतु ‘भलां भवाड्यां यानी’ सारी रीते शोभा वधारी वह दिया है। भोगीलाल सांडेसरा ने भी यही अर्थ में

‘भावाडीऊ’ दिया और सांडेसरा ने ‘भावई’ शब्द के साथ उनका संबंध होने की संभावना दिखाई है। लक्ष्मी चंद कृत औपदेशीक ‘दोहा संग्रह’ जो हीरालाल जैन की ओर से संपादित हुवा है, उनका एक दोहा भी दिया है।

डॉ. भयाळी का दोहा

“मज्जु मेसु महु परिहरह संपई सावउ सोई

फीरकरवाई अेरंडवळि

किं ण भवाई होई।”(८)

हरिवल्लभ भायाणी ने ‘भावाडवुं’ क्रियापद से भवाई नाम बना होगा बताते हैं। दुसरी महत्व की बात के यह है कि ‘भावाई’के वेश बिना भवाई शब्द का अन्य प्रयोग एवं उपयोग होता होगा यह बताया है। तीसरी बात है कि तेरमी शताब्दी की कृति भी होने की संभावना दिखाई है यानी असाईत के पहले भवाई शब्द का प्रयोग होता होगा वह संभावना। दिखाई देती हैं।

हरिवल्लम भायाणि ने ‘संस्कृति’ मासिक पत्रिका का के एक अंक में ‘भावाई ना अडवानो अंक वळवो’ नाम की चर्चा की है। भवाई में आने अडवानी प्राचिनता सिध्ध की है। यानी के असाईत ने जो वेश लिखा उसे पहने से अडवा जैसे वेश होते होगें वह फलित होता है।

भवाई के उद्‌भव की कथा।

“ठाकर शाखे यजुर्वेदी औदिच्य सिद्दपुर– नगर– निवास

ब्राह्मण भारद्वाजी गोत्रना असाईत भूमां प्रख्यात

ऊँजा गामे पटेल हेमाळानी पुत्री गंगा गुळवंत

शियण रक्षवा शाह–सभामां भेळा जमीने राख्यो रंग

जमतां से ठाकरथी उपजी नायक– तरगाणानी ज्ञात

त्रळसो साठ भवाई वेशो रची आसाध्या अंबामाता।"(९)

उपर की कविता में भवाई के पिता असाईत का परिचय दिया है। कवि असाईत का स्थान गुजराती साहित्य के सांस्कृति इतिहास के नरसिंह महेता के साथ लिया जाता है। नरसिंह महेता का समय इ.स.१४८४ से १५३९ का था। असाईत वि.सं. १४२७, सन् १३६० के साल में पद्यकथा हंसाऊली की रचना कि थी उनके आधार पे असाईत का समय बताया जाता है। नरसिंह महेता के पहले पुराणे जैन कवियों बहुत हुई फिर भी पुराणे जैनेतर कवियों में असाईत का स्थान पहेला है। असाईत का समय लगभग ई.स.१३२० से १३९० का माना जाता है। उस समय ई.स. १३२० में दिल्ली सें खिलजी का शासन पुरा हुवा और तध लखो का शासन शुरु हुवा। इसलिए असाईत तधलक के समय में यानी १३९० महंमद के फिरोज तघलक का समय होगा।

असाईत के समय में गुजरात में परदेशी ईस्लामी संस्कार का आक्रमण शुरु हुआ। ई.स.१२९८ से १३०० के बीज गुजरात के हिंदु राज्य का हंमेशा के लिए खतम हो गया और मुसलमान राज्य की स्थापना हुई। दिल्ली से अल्लाउदीन खीलजी का लश्कर गुजरात में डर फेलाकर चला गया। इ.स. १३०० में अल्लाउदीन का साला अलफखान गुजरात का पहेला सुबा बना और तब से गुजरात में पराधर्मी शासन का त्रास शरु हुवा। गुजरात की अस्मिता के सामने शुरु हुवा यह जोखम के सामने अस्मिता को पकड के रखना कितने परीबलों प्रथम उद्भव हुई वह असाईत के भवाई वेशों का महत्व का स्थान हैं। गुजरात की संस्कार की सुरक्षा में असाईत का यह कार्य गुजरात में ज्योतिर्धर के समान हैं।

महीपतराम रुपराम नीलकंठ ने ई.स. १८६६ में 'भवाई संग्रह' नामक पुस्तकमें इस तरह माहिती एकत्रित करके के लिखा है। "भवाई शब्द संस्कृत मूण उपरथी नीकण्यों छे तथापि ते भाषा मां अेवा खेल ने भवाई कहेता नथी. पण नाटक कहे छे. अेवी रमत करनार

पुरुष ने नट कहे छे अने स्त्री ने नटी कहे छे भारतखंड नी बीजी कोई बोलीमां भवाई खेल जळतो नथी. फक्त गुजरातीमांज छे। भवअे शिवनुं नाम छे। केटलाक धारे छे के अे परथी 'भवाई' शब्द उत्पन्न थयो हशे ने तेनो अर्थ शिवनी रमत कही अे तो चाले।" (१०) भावाया कहते ही कि उन्होंने अंबा भवानी की हुन्नर शीखव्यों ने असल भवानी के आगे नाच होता तब कदापी 'भवानी' के उपर से भवाई शब्द बना होगा उनका मूल पुरुष औदिच्य सहस्त्र ब्रह्माण था। आज से तीनसो साल पहले वह 'सीतापुर'आज को सिध्धपुर में हो गये। उनका नाम असाईत था।उनके तीन लडके थे। वह तीनो गाने की कला में कुशल थे और वांजित्र के साथ माताजी के मंदिर में नित्य गान करते थे। उस समय में बादशाह की सवारी आई, और सीतापुर में कुछ समय के लिए मुकाम किया। गाँव में गवैया हों उसको बुलाने का हुकम हुवा। उस समय सिपाई व्यास को दे गया। उनके गान से प्रसन्न होकर बादशाह प्रसन्न हुवा और सरपांव दिया। मलेच्छ का धन लेने के लिए असाईत ने ना बोला। पर बादशाह बहुत आजीजी की तब उन्होने लिया। वह लेने के लिए उनकी ज्ञाति वालों ने ज्ञाति से बहार किया। जीस देवी की मंदिर में असाईत नित्य गान करते थे उस मंदिर में उपवास में बेंठा। सात दिन उपवास हुवा तब अंबाभवानी ने साक्षात आकर दर्शन दिया, और व्यास के लडके को खुद कपडे और शळगार पहेनाकर कहा 'तमे पानोदर गाममां जई तपोधनमां भळो ने टोणुं बांधी भवाई करो। तमने अढारे वर्णना वेश काढवानी रजा छे। भवाई करवी अे ज तमारो आज थी धंधो। अे काम तमने बहु सारुं आवडशे।" (११)

यह समय में सिद्धपुर शहेर के राजाराम ठाकर (छठ्ठा पद के ठाकर अधीकारी) यजुर्वेदी भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण गीतवाद्य से कथा कहेते थे। इसलिए आस-पास के लोगो के जान पहेचान अच्छी थी। उनके पुत्र असाईत भी गायक, वक्ता और कवि, होकर अच्छी प्रतिष्ठा थी। ऊंजा के हेमांळा पटेल के साथ राजा राम का शिष्य और गुरु का संबंध था। होमाळा पटेल और राजाराम के सखा थे। उनके सामने गंगा की हकिकत आई के पुत्र

आसाईत का कवि–आत्म तणप उठा और उन्होंने ऊंजा गाँव में जाके सरदार के तंबू में जाके सरदार को अपने गीत वक्तृत्व से प्रसन्न कर दिया और कहाँ "गंगा मारी पुत्री छे माटे अेने मुक्त करो"।(१२) जेसी मांगणी रखी दुसरों की बात सुनकर सरदार को गंगा ब्राह्मण कन्या की पुत्री नही थी वह बात की शंका होने लगी, इसलिए सरदार ने असाईत ठाकर को गंगा के साथ खाना खाने लिए कहाँ अगर वह दिकरी है उसकी साबिती करने के लिए गंगा के साथ जमीन पै बैठ के खाना खाके साबित करने की आज्ञा की। आसाईत ठाकर बलात्कार होके धर्मपरिवर्तन को अटकाने का प्रयास था, उनके हदय एक तरफ हेमाळा तो दुसरी तरफ कुंवर का खातर कीसी भी तरह रोकना सहि साबित हुवा। उन्होंने मन से मान लिया था सच्चा ब्राह्मणत्व मुसीबत के समय पाटीदार कन्या के साथ भोजन करने से भ्रष्ट होता ही नहीं। असाईत अंतिम समय में जुगाड किया औदिच्य ब्राह्मणजाति के ठाकर कुटुम्बं के सिद्दपुर नगर और सरदार का आदेश मान लिया। गंगा के साथ एक थाली में खाया और गंगा को मुक्ति दिलाया।

सिध्धपुर के ब्राह्मण यह बात को मान लेते नहि हैं। उन्होंने शास्त्रभंडार में से एक एक शास्त्र उनकी सामने रखा, उनके साथ भोजन व्यवहार बंध किया उनके साथ बेटी व्यवहार यानी (शादी –ब्याह) बंध कीया। उनको अकेले रख दिया। बहुत बे–रहमी से उनको परेशान किया गया। सिध्धपुर से उनको निकाल कर उनके तीन पुत्रों मांळण ठाकर, जयराज ठाकर और नारण ठाकर के साथ ऊंजा आके रहे। हेमाणा पटेल उनका ऋण को उतारने मांगते थे। उन्होंने तीन पुत्र को ऊँजा में घर बनवा दिया, हेमाणा पटेल की जमीन में तीन पुत्र को खुद की जमीन में सें थोडा बीघा जमीन बक्षिस के रुप में तांबे के पत्र पे कडवा पाटीदार की समस्त ज्ञाति की तरफ से वंशपरंपरा के अमुक हक्कों उनकों लीख कर दिया। इस तरह हेमाणा पटेले गुरु राजाराम और मित्र असाईत का कायमी रुण करके दिखाया। सब जगह पर उन्होंने पत्र

लिखा। उनमें से अेक पत्र ऊँजा के पटेल जो मध्यप्रदेश के पटेल पर लिखा था। उनके कुछ शब्द यहाँ पर है।

"श्री गणेशाय नमः। श्री बेचराजी सत्य है। संवत १९०४ वरस कारतक सुदी ५ वार आदित्या (रवि) गाम ऊँजा थी लिखितंग या. लखमीदास या थोभणदास दास. या जेकळदास, कुबेरदास अंतरे सर्व भाईओ मलीने लखी आप्युं छे सर्वेने रामराम वंशजो, खुब लखा कारण जे छे जे नायक वनमाळी दुवारकादास मोतीराम नी प्रतिमा पाळजो। तरगाळा अमारा छे, सर्वना छे। लेवा तथा कडवा छे। गाम बारीसणाना पाटीदार उपर आश्रित छे। त्याना ठाकर नी भलामण छे। कंई (खेतर) वाढ(वढायत्यारे,अनाज (अने) लागो (आपवानी) संभाण लेजो तो तमारामां भळे छे। सन श्री सूरजनी शाखे,(सतश्री) चंदरमानी शाखे आ पत्र लख्यों ते सही छे, पत्र लईने आवनार ने संभाळ राखजो, अमारा माथा उपर (छे अेम) तपास जो (जाळवजो) लेवा, कडवा समस्तने लख्युं छे। सर्वे थइने पाळजो, श्री बेचर सत्य छे। अमे सत्य छाए।"(१३)

ऊँजा के पाटीदार हेमाळा पटेले असाईत और उसके परिवार को लेखित में कहा हैं कि। "अमे ऐक रोटलो खाता होईशुं तो अेमांथी अडधो तमने आपीशुं आजथी तमे अमारा समस्त पाटीदार समाज ना गोर गळीशुं"।(१४) उनके बाद हर गाँव के पाटीदार को कह कर एक दस्तावेज करके दिया था।

दस्तावेज में लिखा के गुजरात और दुसरे जहाँ जहाँ पाटीदार हो उनको हर घर से ऐक रुपिया हर साल देना हैं। उसी तरह हर होली के तहेवार उत्सव पे नये गेंहु पांच शेर अथवा खाडा का अनाज पांच शेर अथवा खुद के घरमें से मुँग, तुवेल, गुड, मीरची, अपनी परिस्थिति के आधीन देना पडेगा। कम से कम दश शेर अनाज बीना नापे देना पडेगा। जो भी यह नियम का पालन नहि करेगा वह गाँव के पंच उस व्यक्ति को ऐक आना या दो आना दंड करके यह अनाज देना पडेगा और हर साल एक रुपयियाँ देनेका पालन करना पडेगा।

ऊँजा स्थिर होके असाईत ने भवाई के वेशो को लिखा उनके पुत्रों की मदद से उनको शरु किया। गाँव की जनता में धार्मिक उत्सव के साथ भवाई ने भी जीवन में उल्लास लाया सिध्धपुर के ब्राह्मणो ने अपना त्याग दिया था फिर भी असाईत को ऊँजा में आके भी ब्राह्मण की जनोई और अन्य पूजा पाठ विधि आदि का त्याग किया नही था। उनके साथ साथ हेमाळा पटेल के साथ का व्यवहार का भी त्याग नहि किया थ। इसलिए ऊँजा के सत्तावीस घर के ब्राह्मण ज्ञाति के लोगों में भी असाईत शांति रहेने नहि दिया। हेमाळा पटेल के आश्रित रहने से (अपभ§«स से असाईत) से जानने लगे (कोई आशादित्च उपर से आशाराम के असाईत भी कहने लगे ऐसा माना जाता है) उसी तरह तीन घर में रहने के कारण उनके ज्ञाति की तरफ से 'त्रणघराणा' (तीन घराणी) कहने लगे उनमें से कम शब्द में। 'त्रगाळा' कहलाया। इसी तरह उनका जातिवाचक नाम हो गया तरगाळा कीसी भी 'त्रण जाति ब्राम्हण श्रीमाळी,औदीच्य,और व्यास' यह तीन जाति मीलने से तीन गाळावणा यानी 'त्रण गाळाळा उसी तरह त्रागाळा शब्द हो गया ।'

डॉ.हरिवल्लभ भायाळी त्रागो अेटले जनोईनो दोरो धारण करनार त्रागाणो अेवी व्युत्पत्ती बतावी ने अेम त्रागाणा शब्द थयो बताव्यो छे। (१५)

रोटी के अलावा बेटी का बहिष्कार असाईत को ज्यादा परेशान किया इसलिए उनके जैसा कोई बहिष्कृत ब्राह्मणो में मील जाना ही जरुरी समझा। कहते हे कि इसि समय में (दो दिन पेढी आगे पीछे) हेमचंद्रचार्य के समय में भिन्नमाला में से पाटण में आके वहाँ की मूल ज्ञाति श्रीमाणी ब्राह्मण की टोली में आचार्य श्री ने वासक्षेप देते समय चतुर्विध संघ से श्रीमाणी के कितने हक्को देकर जैन समाज में मीला दिया। यह जैन धर्म श्रीमाणी को भोजक नामसे भी जाना जाता है। ग्राम भोजक (गामनो वडो. टोळानो वडो)शब्द के साथ भी भोजक शब्द को जोडने का प्रयास किया है। (बोम्बे गेझेटियर में उलेख इस तरह से दिया "अमूक ज्ञाति साथे भोजन कर्यु माटे भोजक"& (१६) ऐसी व्युत्पत्ति दि गई हैं। रत्नमणिराव जोटे ने

अपने पुस्तक में लिखा है कि "भोजक ब्राह्मणनो इतिहास रसमय छे। अेमनुं नाम अने अेमना रिवाज अे लोको परदेशीओनी कोई जातिमांथी थया होय अेम बतावे छे।" (१७) "भोजक, श्रीमाणी अने मग ब्राह्मण।" (१८) इनके भाग (बोम्बे, गेसेटियर पृ ८.४४० और ५०० के उनके आधार पे) भोजको श्रीमाळी ब्राह्मणोमें से बहिष्कृत हुऐ थे और त्रागाणाओ औदिच्य सहस्त्र ब्राह्मणों भी बहिष्कृत थे इसलिए दोनो साथ में रहें। (सौराष्ट्र के पास व्यास जाति बहुत है और उनका मुख्य व्यवसाय भवाई अथवा कथावार्ता का है)

भवाई शब्द की व्युत्पत्ति के विविध मत है। किसी ने भव वह शिव का नाम है। उनके उपर से यह शब्द आया है। कीसीने उसका अर्थ 'भवनी वही' यह भी कहा जाता है। श्री जयशंकर 'सुंदरी' ने यह अर्थ अभिप्रेत था। डॉ.हरिवल्लभ भायाळी ने यह शब्द 'स्त्री वेशधारी नर' अर्थ का 'भुकंस' शब्द उपर से आया हुवा है। स्व.रसिकलाल छो परीखे 'भपको सजावट' के अर्थ के साथ जुडाहुआ है। वेश के लिए पुराने समय में भावना शब्द का आधार लीया है। उन्होंने लिखा है कि "रसोई अने तेनो करनार रसोईओ, गवाई अने तेनो करनार गवैयो, तेम भवाई, अने तेनो करनार ते भवैयो । रसोईना बराबर अर्थमां रासन शब्द संस्कृत मां छे। गायन अने 'गान' शब्दों तो जाणीता छे। आ साद्रश्यथी भवाई माटे भावन शब्द घटे। वर्णोच्चारनी प्रक्रिया प्रमाणे आ वास्तविक व्युत्पत्ति छे के नहि ते विशे हुं अभिप्राय आपी शकुं तेम नथी। छता अेटलुं स्पष्टाताथी कही सकुं छुं के मांडणे पोतानी रचनाओने भावन कहले छे। मांडण नायके भावन जोडियोरे, बोलवा बेचार कीरत झंडो तेजली रे, पोकी समंदर पार"।(२०)

भावन त्रीजुं.आबु का घणी का भावन, द्वारका का घणी का भावन, ढोला का भावन पूरा हुआ आदि।

जैन परिभाषा में रात के मंदिर में अथवा पूजा स्थान के चौगान में स्तवनों वाद्य के साथ गाते है, और कभी कभी नृत्य भी होता है जो आज भी भावना कहा जाता है। जैसे की 'आजे भावना छे,' 'भावना बैठी छे' आदि।

भवाई – भावना के सबंध केवल शब्द गन नही है, वस्तुगण भी है।

"चाचर तहां जातर भली, जोत तणी जगमग,

घळा अेक गुळीजन रमी गया, तीहोना पगनी राज,

सकण सभा तो बेठी भली सौ सक्त शे दास।

भावे भवाई सांभणे तेनी अंबा पूरे आस।

सफण सभा तो बेढी भली सौनी दुर्भत हरो,

असाईत मुखथी ओचरे, हवे रामदे रमतो करो।"२१

भवाई वह अंबा माता को चाचर में होना 'भावम' वह भक्ति का प्रकार है।

असाईत के बेटें

ऐसा माना जाना है कि चूडो,चूंदडी ने कोचळी साथे माताजी का वरदान मीला था प्रथम 'पावैपुराण' लीखा जीस में त्रागाणा कोम की उत्पत्ति का ख्याल आता है। फिर बहुचर माताजी का आख्यान लीखा, उसमें मेपजी बारैया का निर्देश, मिलता होगा ऐसा माना जाता है।

उसके बाद भवाई का पेडुं शरु हुवा।

असाईत ठाकर के छोटेभाई केशवलाल ऊँजा में उमिया माताजी का मुजरा करके चवन सुबा से स्त्री का स्वांग करके अपनी कला दिखाते है। वहा वह लेग वटलाया।(ज्ञाति का परिवर्तन) उनके वंशज माळवामां होंगे वह माना जाता हैं। एक मत के अनुसार आशाराम ठाकर के एक बेटा और उनके भाई भलाराम के दो दिकरा (बेटा) रामशंकर और रमनशंकर थे, आज भी भवाई में गाया जाता है कि,

"राम -रतनियो तने विनवे रे, देव दुंदाळा"२२

राम–रतन और गोपाळ नायक

यह राम के घर कवि गद हुवा और ज्ञानके घरपे गोपाळ नायक हुवा। अकबर के दरबार मे नामी गवैया से रहते थे। असाईत रामदेव का वेश अधूरा रखा था वह कवि गदे पूरा किया। उनके छपाई में आता है कि 'कवि गद कहे सुन ठाकरो' वहां 'कविगत कहे' अैसा आता है वह 'कविगत ' अंचले कविका संप्रादाय नहीं पर कवि गद नाम रहा है। कहते हैं कि गोपाण नायक टोली बनाई, खुद ही उनका सूत्रधार बने । उसके बाद भावैया नायक से पहेचान ने लगे। भवाई में उद्‌बोध आते है कि 'अहो भाई नायक।' झंडा झूलण का वेश मांडण नायक ने लीखा है। उनके काव्यों 'मांडण की झकडी' के नाम से पहचानते है। जब राधनपुर में हर जीवन नायके। मियांबीबी जैसा वेशे लिखा है।

तरगाळा शब्द की उत्पत्ति

'राम' और 'रतन' वह लोकवार्ता में प्रसिद्ध नाम है। दोनो भाईओं से यह वार्ता पहेचान जाती है। कोई कहेता है कि कच्छ के रा'देशण के समय में तो कोई कहते है कि सिद्धराज जयसिंह के समय में हुवा है। कोई उसको चारण भी कहते हैं और कोई उसे बारोट कहते है। संभव है दो भाई के नाम रखने का महिमा भी हो, वेसी लोकवार्ता प्रगट हुइ है।

भरतराम महेता अंबाजी मै १९५३ में ५ से ६ दिन तक भवाई के बावीस वेशो को देखा और लिखा जिसमें 'काछिया की भवाई ' के समय भवाई उत्पत्ति के रुप में वेश भजवनारने जो बात की वह असाईत के तीन बच्चे होने का बताया है। "'मांडण,' जयराज अने नारायन कहे छे के ऊंजा मां आत्रण भाइनां घर वटलायेला हता अेटले 'त्रिधरा ,' कहेवाया, आ शब्द उपर थी 'तरगाणा'थइ गयुं, अथवा 'त्रण घरोळा' उपरथी 'तरगाणा'थयु"। (२३)

तेर घराळा ने त्रेगाळा

दुसरे मत के अनुसार जो कोई ब्राह्मण को ज्ञाति से बाहर नीकाले गये वह सब असाईत के ज्ञाति(गोळ) में आ गये। वेसे तेर घर थे। इसलिये 'तेर घराना' 'तेरघरा' कहेवाय मुसलमानों उस समय में उच्चार से 'तरगळा' कहते थे उसके बात 'तरगळा' नाम से जाने गये।

तीसरे मत के अनुसार असाईत ने कणबी के साथ भोजन करके ज्ञाति का परिवर्तन हुआ वैसे जो श्रीमाणी ब्रह्मणो जैनो के साथ भोजन करके ज्ञाति परिवर्तन से वह भोजक कहलाया। यह भी असाईत की टोली में आ गये। यह भोजक में से बहुत सारे लोग जैन के देरासर में पूजा पाठ करते रहे है। तीसरा चित्रोडा नागर जो ज्ञाति परिवर्तन से वह भी असाईत के साथ मील गये और व्यास बन गये। इसी तरह ब्राह्मणो के त्रण गाणा मीलके उसमें से जीन्होंने भवाई की उस ज्ञाति को जो प्रगट हुई वह 'त्रेगाळा' कहलाया उसमें से 'तरगाणा' बना । कोई कहता है कि त्रागां करने से 'त्रागाळा' कहलाया। फिर उनके पीछे कोई इतिहास मीलता नहिं है। त्रागा करने–वाला 'त्रागाळुं' कहलाया है।

त्रागाळा–भवायानी जातो

'तरगाणा' की ज्ञात और भवाई खेलनेवाली ज्ञाति इतने से ही नहीं रुकी है। कोणीके भवैया खुद को अबोटी ने गुगळी ब्राह्मण में से खुद की यजमान कोणी के साथ भोजन करने से वटली (ज्ञाति परिवर्तन) 'तरगाणा ' हुए वह बताते है। चारणो पुरोहित रावळो चारणो के साथ भोजन लेके ज्ञाति परिवर्तन उसमें से एक भाग भवाया में मीला वह 'रखैया रावळ' कहलाया। सुरेन्दनगर तहसिल के रावणन्याकार के भारदगाँव में वह रहते है। चारणो के समक्ष वह अलग स्थल पर रहते है। उसी तरह कितने मुलसमान भी हुई वह भी आज भवाई करते है। उनके यजमानों के साथ खेलने जाते है। हरिजन के भी खुद के भवैया थे हरिजनवासों में खेलते है। आगे भरवाडो के भी भवैया भी कहलाता है। व्यास और भोजक के

बीच शादीब्याह होता है। भोजक तण गुजरात में बसते है। व्यास के लिए भगे शिवपंथी होते है।

जैसे 'भवाई' 'तरगाणा' और नायक शब्द भी अभिप्राय मांगते है। एक मत के अनुसार गोपाळ नायक अकबर बादशाह के समय में हो गए। उन्होंने भवाई व्यवस्थित करके उनकी टोली लेके नीकल जाते थे। यह गोपाळ नायक दो हुऐ थे। एक अलाउद्दीन खीलजी के समय में दुसरा अकबर के मसय में।

नायक जी पदवी और पुरानी और नई ऐसी दोनों संगीत पध्धति का खुब सुंदर ज्ञान हो, गायन वादन और नर्तन यह तीनो का सुक्ष्म भेदों का जीसको पूर्ण ज्ञान हो छंद, प्रबंध गाके जीनको सीखा शके वह नायक की पदवी हाँसिल करते। गोपाळ नायक जैसे बैजु बावरा को नायक की पदवी मीली थी। संगीत रत्नाकर टीका लीख

पहले गोपाळ नायक दक्षिण हिंद में हो गये। अलाउद्दीन खीलजी के सेनापति मलिक काफूरे ई.स. १३१० में दक्षिण हिंद उपर चढाई की तब बहुत सारी गायक वादक के साथ लेके गये, जो बाद मे दिल्ली में रह गये।

कुछ भवाई कलाकारो का परिचय इवं उनका कार्य

भवाई लोकनाट्य को देखने पर सभी विद्वानो ने अपना अपना मत दिया है। भवाई जो मूल नाटक का स्वरुप हैं इस में हमें नाटक के तत्व भी मिलते है। भवाई के जो कलाकार होते है, उन्हें यह कला पारंपरागत मीलती है। कुछ भवाई कलाकार अपने पेढी दर पेढी उनको वारसा में देते है। उनका जीवन पुरा भवाई करते करते ही पूर्ण हो जाता है। यह भवाई कालाकार उन्हें पूजा के रुप पे भी मानते है। माताजी का रुप भी यह भवाई में देखने को मीलता है। एसे कुछ विचार विद्वावानो ने हमारे समक्ष रखा है।

डॉ.अमृतलाल पटेल ने कहा हैं कि. 'भवाई नी उत्पत्ति नो इतिहास तो काईक जूदो ज छे, जे हेमाळा पटेल साथे जोडायेलो न होवा करता समग्र पाटीदार समाज साथे जोडायेलो छो।'

जय शंकरभोजक

शरुआत ना समयगाळाथीज भवाई ना कलाकारोने सन्मान प्राप्त थयेल छे। कलाकारोनी वात आवे अेटले सौप्रथम जवशंकर सुंदरी नाम याद आवे। जन्म ३० जन्युआरी १८८९

'भवाई संग्रह ' की आवृत्ति

भवाई संग्रह की पांच आवृत्ति हुई है।

(क) प्रकाशनसालः सने १८६६/संवत१९२२)

एकः वेशे (१) गळपति (२) जुठण (३) कंसारो (४) मियांबीबी (५) लालजी (६) मणियार (७) झंडाझुलण (८) छेलबटाउं (९) कजोडो (१०) रामदेश (११) शूरो शामळो (१२) काबो (१३) विको सिसोदियो (१४) दलित वेश (१५) बेचराजी (१६) राजा देगम

यह पहेली आवृत्ति में महिपतराम ने भवाई वेशो के संग्रह में खुद की बात बाताकर यह पंद्रह वेशों मे संक्षिप्त सार और वेशो का उदेश्य दिखाया है। भवाई शब्द के अर्थ को उन्होंने प्रयत्न किया है। 'भव अे शिवनुं नाम छे केटलाक घारे छे के अे परथी भवाई शब्द बन्यो हशे ने अेनो अर्थ शिवनी रमत कहीअे तो चाले" । २४ महिपतराम समाज के सुधारक थे। उनकी ग्राम–जगत में लोकप्रिय भवाई वेशो का उपयोग समाज के कार्य के लिए किया था। भवाई से जो गुणदोष और दोष पक्ष दोनों की बात की हैं। दोषपक्ष को सहजता से स्वीकार कर सकते है। यह भवाई जो लुप्त होती जा रही है। भवाई को सजीवन करने के लिए उन्होने मूल घटना के साथ गूंथळी के स्वरुप को प्रयत्न किया गया है।

(२) दुसरी आवृति (बीजी आवृत्ति)

(क) प्रकाशन वर्षः सन् १८७९ (संवत १९३५)

वेषोः– पहेली आवृत्ति में १५ से ज्यादा और बाकी के चार वेष मीलकर १९

(१०) जोगणी (१७) बावो (१८) सघरा जेसंग (१९) पांच चोर

३ त्रीजी आवृत्ति (तीसरी आवृत्ति)

अप्राप्य

(४) चोथी आवृत्ति (चौथी आवृत्ति)

(क) प्रकाशन सालः सन् १८९४ (संवत १९५०)

वेशः दुसरी आवृत्ति की तरह १९

५ पांचवी आवृत्ति (पांचमी आवृत्ति)

(क) प्रकासन साल सन् १९११ (संवत् १९५०)

वेशो दुसरी आवृत्ति की तरह १९

(६) पुनर्मुद्रण छठी आवृत्ति (बीजी आवृत्ति का पुनः प्रकाशन)

मूल दुसरी आवृत्ति 'गुजरात साहित्य अकादमी' का सन् २००३ के यह प्रकाशन में अढार भवाई वेशो है। (दलित का वेश नही है)

(२) देशी भवाई नो भोमियो (सं.मायाशंकर जी भाई शुक्ल) पांच जेटली आवृत्ति ओ वहे छे)

वेशो (१) ब्राह्मण (२) नटावो (३) केरबो (४) वाणियो (५) भोई पूरबियो (६) पावो पुराण (७) कहान गोपी ओर (८) सराणियो (बीजी आवृत्ति में) (९) शंकर पार्वती (पांचमी आवृत्ति में) (१०) रामदेव (११) पठाण (१३) साधुडी

(३) भवानी भवाई प्रकाश (सं. हरिहरमणि शंकर धनशंकर मुनशी)

(क) प्रकासन सालः लीखा नही है,

(ख) वेसो (१) गणपति (२२) झूठण तरकडियो (३) मणियारो (४) कंसारो(५) बेगम पदमावती (६) पावो (७) जोगी जोगण (८) टेंडो (१) वाणियो (१०) शूरो मींयाबीबी (१२) वीको (१३) बटाउं छेलबटाऊ (१४) कजोडो , वणजारो (१५) काछीया कुंजरा (१७) दलितनो वेश (१८) रामलखन (१९) दरजी (२०) काबो (२३) पुरबीयो (२२) रामदेव

हरिशंकर के वह वेशो आरासुर अंबाजी के यात्रा स्थल पर संघो से प्राप्त हुए थे। इनके एक संघवी त्रपाडी लक्ष्मीलाल अंबालाल से और दुसरे संघ के संघवी अंबाप्रसाद नारायण भाई से यह वेशो प्राप्त हुए थे । जो लेखीत मीले है वह वेशो उनके स्वरुप में प्रिन्ट किये है। इतना ही नही हर वेश के नीचे अपना नाम है। संपादक के रुप में लिखा है, जहाँ अभद्र वाक्य आता है वहाँ पर वह खाली जगह रख देते थे। वेश भजनेवाला मूल पाठ को वफादार होकर वेश कर शके ऐसी संपादक को आशा होती है। आज भवाई में नरघां और हार्मोनियम आ गऐ हे जो मूल भवाई में थे ही नही उन्होने यह भी लिखा है।

(३) गुजराती नाटक याने देशी भवाई (सं. पुरुसोत्तम दास गीगाभाई शाह)

(क) प्रकाशक साल: लीखा नही है।

(ख) वेश (१) कहान–गोपी (२) दक्षिणी स्त्री (३) महादेव (४) फकीर नायक (५) मारवाडण (६) बावो (७) कजोडा (८) काबो (९) पठाण (१०) साघुडी (११) छेलबटाउ (१२) पावैया पुराण (१३) रामदेव (१४) झंडाझुलण (१५) जुठण (१६) कंसारो (१७) मियां बीबी (१८) लालजी मणियार (१९) शूरो शामणो (२०) विको सिसोदियो (२१) दलित नो वेश (२२) बहचुराजी (२३) राजा देगम (२४) सघरा जेसंग (२५) पांचचोर

(ग) गुजरात मुख्यत्वे सौराष्ट्र में भजवाते वेशो को एकत्रित कीया है

(४) भवाई – सुघाबेन देसाई

स्व. सुधाबेन रमणलाल देसाई अपने पी.एच.डी के अभ्यास दरमियान तैयार कीये शोध निबंध को फिर से संस्कारी मराठी तैयार दीया हुआ ग्रंथ है।

(क) प्रकाशन साल सन १९७२

(ख) वेशो

(१) गणपति (२) जुठण (३) अडवो वाणियो (४) छेल बटाउ (५) लाल बटाउ (५) पठाण बामणी (६) मींया बीबी (७) लालजी मणियार (८) फकिर नायक (९) झंडा झुलण (१०) वणजारो (११) कंसारो (१२) दर्जी (१३) कुंभार (१४) भोई पुरबीयो (१५) गोपाळ

डागलो (१६) सराणियो (१७) दलितनो वेश (१८) महियारी (१९) मारवाडण (२०) बावो (२१) जोगी जोगण (२२) साधुडी (२३) काबो (२४) पांच चोर (२५) कजोडा (२६) मुलचंद (२७) सुरो शामळो (२८) वीको सीसोदीयो (२८) टेंडो (२९) रामदेव (३०) सघरा जेसंग (३१) जस्मा ओडण (३४) राजा दंगम (३५) माणसती (३६) पलाईरावत (३७) काळका (३७) पावौपुराण (३८) कहान गोपी (३९) रामलखमख (४०)शंकर पार्वती (४१) महादेव (४३) कसमत–बाबा (४३) कंरबो (४४) मदारी (४५) जोगणी (४६) दक्षिणी स्त्री (४७) रानी हमीर

उनके अलावा नामनिर्देशन से भी दुसरे वेशो कोन से है उनकी बात की है–जैसे की (४८) चत्रभुज (४९) वाणंद (५०) गोलो (५२) मोची (५२) वामन (५३) तडका (५४) अभिमन्यु (५५) हरीशचंन्द्र (५६) पारसी (५७) मडम (५८) डंकी (५९) वोरा (६०) वादी

(५) झंडा का खेल (सं. भीखाजी शिवलाल शर्मा केरोलीना गोर)
का प्रकाशनसाल (संवत १९७०)

इस किताब में एक ही वेश मीलता है। असाईत ने ३६० वेशो लिखा हो माना गया है। सभी वेश नही मीलते है। उनसे पहले भी कही सौ वेसो का निर्माण हुवा है। “असाईत मुख ओलरेरे रामदेव रमतो हुआ” (२५) ऐसा रामदेव के वेश में आता हैं। यह असाईत रचा हुवा वेश हैं। रामदेव वेश में नव निधि और चौद विद्या आदि का वर्णन कवि गद के नाम लिखा है। गद का कृतत्व दिख रहा हैं। गोपाल नायक दलित का वेश लिखा हुवा माना जाता है। तो मांडण नायक ने झंडाझूलण के वेश लिखा हैं। आज ३६० वेश में से ६० जीतने वेश ही मीलते है। असाईत ने पहले धार्मिक स्वरुप फिर अैतिहासिक स्वरुप के अंत में सामाजिक स्वरुप के वंश का निर्माण किया था।

श्री. सहजानंदस्वामी और भी दयानंदसरस्वती ने जीतनी सेवा सामाज की है उतनी सेवा भवाई के पिता असाईत ने वेशो के माध्यम से कि हैं। यह वेशो प्रेक्षको के साथ सीधा संवाद होता हैं। जो भवाईवेश की विशेषता है।

लोकनाट्य भवाई के वेशो एवं प्रकार

लोकनाट्य भवाई गुनके प्रकार नहिं होते है। जब भवाई का उद्‌भव हुवा तब उनको आदि रुप माना गया है। भवाई में समय के साथ साथ उसका भी बदलाव आया है। भवाई की जब असाईत ठाकर ने निर्माण किया उस समय समय का जो वर्णन था वह बहुत ही रुढीचुस्त था समय के चलते उस समय में मुसलमानों का राज था तब भारतीय संस्कृति को समाज के सामने रखना मुश्कील था उसी समय असाईत जी ने एक इतिहास रचा। नात–जात का भेदभाव खतम किया और एक नारी की रक्षा करना हमारा सर्व प्रधान धर्म है वह असाईत जी ने बताया है। उस समय गंगा की रक्षा तो की पर समाज के नियम और रुढीचुस्तता के कारण असाईत जो ब्राह्मण कुल का था तो उन्हें बहार नीकाल दिया और उसी समय वह अपने गाने की प्रधानता के कालण ऊँझा में स्थित उमियां माताजी की आराधना की और उनसे आशीर्वाद लेके भवाई के वेशो के की थी। उस समय जब भवाई वेशो को दिखा गया तो ज्यादातर वेश जो होते थे वह आध्यात्मिक वेशो का ही निर्माण किया था। उसके साथ साथ आध्यात्मिक के साथ सामाजिक वेशो की भी रचना की है । भवाई के मुख्य वेशो में हमें आध्यात्मीक वेश ही मीलते है।

आज के समय में हम देखे तो भवाई लुप्त होती दिख रही है। यह आज भी कई सारे मंडल में है, जो भवाई करते है। उत्तर गुजरात और सौराष्ट्र की भवाई मंडली आज भी पारंपारिक भवाई करती है। यह मंडलीयां समाज के सामने नहि आयी है। असाईत ठाकरने उस समय समाजीक समस्या को वाचा दी थी। वह धर्म के समान रुप से मनाते थे, इसलिए उनका रुढी वाद के सामने जो पुण्य प्रकोप उनको वेशो में देखने को मीलता है। एक जो कटाक्ष करता है तो दुसरा हास्य के रुप में उनका जवाब भी देता है।

असाईत की भवाई रचना पे हमारे प्राचीन नाट्य की असर मील ही जाती है। परंतु नाट्य में पुराण कथा और उसमें गाने की रीत और शैली की असर असाईत पर ही हो वह लग रही है। असाईत के भवाई वेश में गद्य का प्रमाण कम है गीत, नृत्य का प्रमाण ज्यादा होता है। नृत्य में भी वैविध्यता मील जाती है। गीत संगीत के निष्णांत में विको सीसोदियो मोहिना–बटाउ, छेलबटाउं, शुराराठोड, रामदेव का वेश और अन्य वेशो मे शृंगार की मावजत इस तरह से होती है की संस्कृत नाटको के रचनाकार जैसा लगता है। असाईत के वेशो की गुंथणी और कथानक वह लोकनाट्य से संबंध रखते है।

असाईत ने तीनसो वेशों की रचना की हैं परंतु साहित्य क्षेत्र धुरंधरो जीनका ग्रामीण प्रजा के साथ नजदीक का संबंध थे। कितने वेशों में तो उनकी बोली पर प्रभुत्व रखा हैं। भवाई में कलाकार की शरीर की चेष्टा अलग प्रकार से उभरकर सामने आती है।

अतः वेशो जो होते हे वह पूरी–रात खेले जाते है। आधी रात के पहले प्रहर से सुबह का पहला प्रहर तक यह वेशो गवाता, भजवाता है। माठ, दंश, आशावरी, परज, सोरठ, कलीगंगा, सोहनी, प्रभात, बिलावल आदी।

भवाई के वेश का वर्गीकरण

(१) सामाजिक वेशः 'जूठण', 'छेलबटाऊ', 'मिंयाबीबी', 'पठाण–बामणी', 'भक्ताणी साधु' 'झंडाझूलण', 'वणझारो', 'बजाणियो', 'दरजी', 'सराणीयो', 'मून्डा', 'लालवादी' 'पवाई'(पतई रावण)

(२) पौराणिक वेशोः 'राम लक्ष्मण', 'शंकर पार्वती', 'कान गोपी', 'मठीनो वेश'

(३) ऐतिहासिक वेशोः 'डोडिया राजपूत', 'शूरो राठोड', 'विकेसिसोदीओ', 'रामदेव' 'जसमा ओडण'

यह सभी वेशो में प्राचीन वेश 'रामदेव' माना जाता है। यह वेश सात साढे तीन दिन तक होता है। यह वेश में सृष्टि के अंत से आरंभ तक की कथा है। यह कथा कविता के रुप में है, कवित्व की शक्ति का लय का छंद मात्रा आदि असाईत के ज्ञान का परिचय करवाती हैं।

भवाई के प्रकार.

लोकनाट्य भवाई में हमें समाज का रुप मीलता हैं। असाईत ने जब भवाई की रचना की थी तब कोई नियम नहीं बने थे। परंतु उनके कुछ नियम बनाऐ थे उनके कारण भवाई की मर्यादा रहें। भवाई को भजवने के लिए कुछ नियम थे। या यह भी कह सकते है कि उस समय स्त्रीयोको आज की तरह नाच–गान नही करती थी। असाईत ने जब भवाई की रचना की तो उनको गाने का कार्य करते थे। इसलिए जब उनको ज्ञाति से बाहर किया तो उन्होंने गाने का कार्य किया परंतु उन्होने समय के साथ देखा तो गाने से समाज की कुरितियों नही निकल सकती है। इसलिए उन्होंने भवाई की रचना की जो गान नृत्य के साथ हमारे सामने प्रस्तुत कर सके और उनका प्रभाव इतना रहे की समाज धर्म में जो कुरितियां थी वह सब के सामने उजागर हो। यह कार्य के लिए ऊँझा सें उमियां माताजी की आराधना की और जीनको ज्ञाति से बाहर किया था उनके पालन पोषन की अरजी की उसी समय माताजी ने प्रगट होकर कहां "त ु गभाराईश नहीं हु तारी जीभ उपर रहिश। तारो वंशवेलो वधशे तारी कोमनां कोई पुरुषातनहीन (पावैयो नही थाय,५०० वर्ष सुधी तमारे समाज ने धर्म नी सेवा करवानी छे।" २६

यह आशीर्वाद लेके असाईत ने ऊंझा में अपने भाई के साथ रहे। वह जगह–जगह पर भवाई के वेशो करते थे। वेसा माना जाता है कि वह सामाजिक वेशो को करते ते। उन्होने स्त्री का जो पात्र आता था वह पात्र पुरुष ही करते थे। उस समय स्त्री की अपेक्षा होती थी और मुसलमान का शासन था इसलिए स्त्री की रक्षा के लिये वह साथ में लेके नही जाते थे। भवाई

को करने के लि वह तीन–चार मात्र बाहर ही गाँव हर गाँव घुमते थे। वहीं पे उन्होने अपने खानेकी रहनेकी जगह मील जाती थी। हेमाळा पटेल ने उत्तर गुजरात अवं सौराष्ट्र में उनको दाना देते थे। वह गुजारा उसी से करते थे।

भवाई को दो भागो मे विभाजीत किया जाता है।

(१) पारंपारिक भवाई

(२) आधुनिक भवाई

पारंपारिक भवाई

पारंपारिक भवाई जो है वह आसाईत ने जीस समय भवाई की रचना की थी उसे कहाँ जाता है। पारंपारिक भवाई के कुछ अलग नियम होते है। पारंपारिक भवाई में वेश जो होता है वह असाईत ने खुद लिखे थे उनके परंपरागत यह वेश उनकी पेढी–दर पेढी यह कार्य करते थे। पारंपारिक भवाई के रुप आज भी है। हम सैराष्ट्र मे जो भवाई होती है वह भवाई पारंपारिक रुप से होती है।

उसके अलावा आज उत्तर गुजरात में मूल असाईत के सिध्धपुर में भी भवाई पारंपारिक रुप से करते है। पारंपारिक भवाई में उत्तर गुजरात हो या दक्षिण गुजरात में भवाई के कलाकार वही नियम का पालन करते है। हा दोनो की भाषा या बोली में अंतर हो जाता है, परंतु नियम होते है उनमें कोई भी बदलाव नहि होता है। आज भी वह लोग असाईत के नियम के आधीन ही भवाई को किया जाता है।

पारंपारिक भवाई की संरचना और अभिव्यक्ति

पारंपारिक भवाई में जो एक पटेल समुदाय होता है वहीं पूरी भवाई मंडाली का भरपोषण करता है जिस गाँव में, भवाई मंडली जाती है उसी गाँव के मुखीयां सरपंच ही भवाई के कलाकारो को आमंत्रित करते है। आमंत्रण जिस मंडली के मीलता है वही भवाई खेलने के लिए जाती है। मंजली का रोकाण गाँव के चोरे, सराय या मंदिर में होता है। यजमान

जो होता है। वह ओढने बीछाने का सामान भेज देते है। मंडली की भोजन व्यवस्था का प्रबंध भी वह यजमान ही करता है। इसी प्रकार मंडली को खाने पीने का खर्च नही उठाना पडता है, उसके अलावा भवाई मंडली को यजमान की और से निर्धारित रकम एवं पुरस्कार भी दिया जाता है।

भवाई अलग अलग मंडली करती है जैसे कोळी, मुसलमान और चारण आदि जातियों के लोग भी करते है। यह जाति की अपनी परंपरा अपनी अलग व्यवस्था, होती है। वडोदरा में नवापुरा में वाघरी जाति के लोग भी भवाई करते है। परंतु वह भवाई पारंपारिक भवाई के अंतर्गत नहि आती है। कहि सारे लोग चाचर में आके आरती के समय आके या अन्तमें प्रसंग में कुछ धन भी जुडा लेते है। भवाई जो होती है वह माताजी के चाचर में हीं होती है। मंडली जो होती है वह चाचर में आके सबसे पहेले माताजी की आरती करते है। वहा जहां भवाई खेलने होती है वह चोक बनाया जाता है। जो लोग भवाई देखने आते है वह सभी चोकके आसपास गोलाकार में बैठ जाते है। भवाई कलाकार जो होता है वह पहेले आके माताजी के गरबा गाता है। माताजी की स्तुति करते है भवाई को आस्था के रुपमें भी दीया गया है। कही सारे आज भी भवाई कलाकार उसे जातर यानी बाघा को मानते है। जीनके घर पे बेटे का जन्म हुवा होता है वह भवाई यानी जातर करवाते है।

भवाई के जो नायक होता हे वह आता है और गळेश जी को बुलाता है और चोक पुरवाता है। (यानी आसपास की पुजा) उसका मानना होता है कि जब भवाई करते है उसी समय किसी की नजर ना लगे और कोई बुरी शक्ति उसमें प्रवेस ना कर शके इसलिए गणेश को बुलाते है।

सेव्यो तो लख लाभ दे, विद्या तळा उपदेश,

सभा जेजेकार ओ, गवरी पुत्र गणेश।

इसी श्लोक के बाद चोक की पूजा करते भवाई की शरुआत होती है। साथ में यह पारंपारिक भवाई में ही देखने को मीलता है। जैसे गळपति की पूजा करते है। उसके बाद

नायक जो होता है वह दुसरा जूठळ वेश करते है। जूठण वेश जो वह पारंपारिक भवाई में हर सालो से चले आते है। जठण वेश में कटाक्ष के साथ साथ हसने का भी मनोरंजन होता है।

मंडली में जो नायक होता है उसे वेशगोर भी कहते है। वह आगे जाके अपनी भवाई की जो भाग दौर होती है वह अपने परिवार के भाई–भतीजे को देते है। मंडल में पुरुष–भूमिका करनेवाले छः साते मुख्य रुप से कार्यरत होते है। उसके अलावा मुख्य नायक के अलावा उपनायक प्रतिनायक रंगतरो जो प्रश्न पूछते है उनका भी समावेश होता है। स्त्री की भूमिका में जो पुरष करता है उसे कांचलिया कहलाता है। उनकी मंडल में छः या सात संख्या होती है। एक जो होता है वह रंगलो नटावो विदुषक डागलो आदी की भूमिका करता है। पारंपारिक भवाई में दा भूंगल वादक होते हे। पहेले की भवाई में भुंगल ही केवल वाद्य माना जाता था। आज समय के साथ तबला पेटी मास्तर और झांझ बजाने वाले को समावेश होता है। वह सभी कलाकार गाँव–गाँव जाके भवाई करते है।

पारंपारिक भवाई जो होती है वह केवल अपने कार्य के लिए माताजी के लिए करते है, उसी प्रकार उनको कोई धन प्राप्ति नहि होती है। परंतु समय के साथ आज कही लोग अपने कार्य करने के लिऐ आते है, तो उनको यह इच्छा होती है कि चार पैसा का फायदा हो इसलिए भवाई में कोई निर्धारित पैसा नहि मीलता है। वह भवाई का मुख्य नायक होता है वह मंडली की जितनी पैसा आता है उसी प्रकार से वह लोग भवाई मंडली के लोगो को देते है। उनका भी एक नियम होता है। जैसे कि जो स्त्री पात्र होता है उनका अभिनय जीस प्रकार से होता हे उसी प्रकार उनको पैसा दिया जातो है। उनका भाग दो भाग में होता है उपनायक और कांचलिया यह दोनो को सवा दो भाग अन्य कलाकर होते है उनको दो दो भाग में विभाजित किया जाता है। वाद्यकार जो होता है। उनको डेढ भाग मिलता है। यह सब पहेले ही तय किया जाता है। जो कुशल कलाकार को कभी अधिक रासी भी दी जाती है। भवाई के कलाकर होते है वह प्रतिवर्ष में सात आढ महिनो तक भवाई करते है। उस समय जब भवाई कलाकार बहार

किलते है। तब उनके कुछ नियम का अनुशासन भी करना पडता है? उसी प्रकार से वह जीवन को जीना भी पडता है।

आधुनिक भवाई

समय के साथ भवाई म भी परिवतन आया है। भवाई जो समाज के लिए बनी हई लोक नाट्य के रूप म है। आज भवाई को आधुनिक रूप दिया गया है। आधुनिकता का मतलब यह है की वह समाज के नए समस्या का हल लाने का प्रयास करती है। भवाई म कुछ बदला नहीं है, पहले भी रंगलो या विदूषक होता था, जा भी रंगलो तो है पर उसके साथ रंगली का आगमन हवा है।

आज भवाई म जो गंभीर बात होती है वह उखना, एक दूसरे से प्रश्न पूछने से करते है। 18 मी सदी म नाट्यकार और भवाई अभ्यासीओं नाटक का उपयोग करके उसे रंगमंच तक लेके आते है। वहा पे भोजक, नायक, व्यास रंगमंच से जुड़के भवाई को एक अलग उचाई पे ले जाने का प्रयास किया है। उनहोने पारंपरिक भवाई से अपना एक अलग ही नियम बनाए थे।

दीना बहन गांधी सामाजिक प्रश्न को लोकभवाई के वेषो म लाने का प्रयत्न किया था। पर यह प्रयत्न शहर तक सीमित रह गया। सी.सी. महेता पहेली बार रंगलो-रंगली का प्रयोग करके "हो... होलिका" भवाई नाटक रंगमंच पे लेके आए थे। चिमन नायके 1979 म अमदवाद म जसमा-ओड़न वेश को नए परिवतन के साथ प्रस्तुत किया था। मेना गुजरी म ब्राह्मण और रबारन और बादशाह के म भवाई के तत्त्व का लय बद्ध प्रयोग मिलता है।

भवाई को नया स्वरूप देने से आज की जो शिक्षित युवा पेढ़ी यह अमूल्य भेट को स्वीकार करके उसे आगे बढ़ा ने प्रयास कर सकती है। इस के लीए पारंपरिक भवाई कलाकार को भी इस काय म आके मदद करने पड़ेगी।

भवाई नाट्य अन्य प्रदेश के नाट्य से साम्यता

भवाई गुजरात का लोक नाट्य माना जाता है। फिर भी आज भवाई गुजरात तक सीमित नहीं रही है। भवाई गुजरात म भी आलग अलग प्रदेश म होती है। उत्तर गुजरात से लेके सौराष्ट्र म भी भवाई

का विस्तार हवा है। भवाई को अगर हम यह कहे की वह गुजरात तक सीमित है तो यह कहना उचित नहीं होगा। गुजरात के बाहर भी भवाई का प्रयोग मिलता है।

नौटंकी :- उत्तर प्रदेश का यह लोक नाट्य म कथा बहादूर सुकुमार शहजादिनी की है। वह हर दिन नव टंक खाती उसे हर दिन नापा जाता पर ना उसका वजन बढ़ता ना घटता इस लिए उसका नाम नौतकी रखा। एक शहजादा भाभी के टोना से वह नौटंकी को मिलने लगा, मालन से मित्रता की। मालन को पता चला के यह तो वेश म वह पुरुष बना एक दूसरे से प्रेम हवा और उसका वजन बढ़ गया। यह बात जब राजा को पता चली तो उसने दोनों को मुक्त किया और शादी करावा दी। इनके आधार पे नौटंकी खेली जाती है। वाराणसी और उसके आस पास के क्षेत्र म यह कलाकार होते है। वह मेले उतत्सव के समय यह खेलते है।

कलाकार से बात चित से पता चला की पहले स्त्री का वेश पुरुष ही करता था। वह भी सब समान लेके गुमते है और नाट्य कराते है। भवाई की तरह यह भी स्त्री का पात्र पुरुष ही करता था।

माच:-

राजस्थान का लोक नाट्य है। वह भवाई से मिलता जुलता है। शुरुआत म उनकी स्थापना देवो के आराधना से होती है। उसके बाद गाना आता है। पहले गली को साफ कराते है। रास्ते म पानी का छांटकाव होता है। माच म भवाई की तरह पुरुश ही भाग लेते है। स्त्री कलाकार नहीं होते है। माच मे लोग अलग-अलग जगह से आते है। उसका व्यवसाय अलग अलग है।

तमाशा:

महाराष्ट्र का यह लोक नाट्य है। तमाशा म पहले पुरुष ही थे पर अब उसम भी स्त्री पात्र का समावेश हो गया है। उसकी शुरुआत गणेश वंदना से होती है।

"तुम्ही गौरीचा वंदना

विघ्न कंदना

या नाचता रंगनी जी .... जी.... "1

दशावतार लोक नाट्य म भवाई को तरह भूगल से चारों ओर आहवान दिया जाता है। भवाई को तरह इस म भी देवी देवता का आगमन होता है।

भवाई के वाद्य

भवाई बिना वाद्य के हो ही नहीं सकती है। यह नाट्य से ज्यादा नृत्य कहा जाता है। भवाई म जो संवाद होते है वह गद्य से ज्यादा पद्य म होते है। इसलिए बिना वाद्य के तो भवाई करना ना मुनकीन है। भवाई के मुख्य वाद्य 'भुंगल' को माना जाता है। उनके अलावा भी तबला, झाँझ, घुँघरू का समावेश होता है।

1. भूंगल

भवाई म ध्वनि के लिए भूंगल प्रमुख वाद्य के रूप म माना जाता है। भूंगल के दो प्रकार बताया जाता है। 1. नर 2. मादा

एक का स्वर तीव्र होता है तो दूसरे का स्वर मंद होता है। नर भूंगल म छेद बड़ा होता है और आकार म छिछला होता है। मादा भूंगल म गहराई होती है और छेद भी छोटा होता है। दोनों भूंगल पे देवी का प्रतीक मानते है इस लिए चुंदरी बांध कर रखते है। कलाकार भूंगल को माँ सरस्वती का रूप भी मानते है। भूंगल को लंबाई चार फूट होती है और तीन भागों म होता है। जो भाग हाथ म होता है उसे चमची के नाम से जाना जाता है, वही बीच के भाग को गज और जो ऊपर का भाग होता है वह फणी के नाम से जाना जाता है, ऊपर के भाग म त्रिशूल का चित्र बनाया होता है जो माताजी को शक्ति का प्रतीक माना जाता है। भूंगल जो होता है वह पीतल से बनाया जाता है पर उसम ध्वनि म कंपकंपी को प्राप्त करने के लिए फणी जो होती है वह ताँबे को होती है।

नर भूंगल को बजने के लिए हवा ओंठों से और मादा भूंगल को बजाने के लिए दांत बांध करके किया जाता है। दोनों गाल को खिचकर ओंठों से जो हवा भूंगल म जाती है तब ध्वनि जो होती है वह गंभीर होती है। दांत से जब सीधी हवा अंदर जाती है तब तीखी ध्वनि होती है। भवाई मुक्त है

जब एक भूंगल वादक इधर-उधर हो जाता है तब एक ही व्यक्ति भूंगल को बजाकर स्वर निकाल लेते है।

तबला

तबला दो होते ह - तबला और डग्गा, नरघा, दाहिना और बॉयां, यह नाम से जाने जाते ह। भवाई म इनका नाम है नरघुं और भोणियां दोकड़ और तेज आवाज म बजाये जाते ह। तबला शीशम, खैर या बीया के की लकड़ी से बनाया जाता है और अन्दर से खोखला होता है जिसे कोठी कहते ह।

झाँझ

भूंगळ और तबला के अतिरिक्त भवाई म तीसरा महत्त्व का वाद्य-यंत्र है झाँझ। इसकी तो बनावट ही इस तरह की होती है कि गायक के शब्द ठीक से सुने जा सकते ह यानी शब्द सुनाई पड़ने के बाद ही इसकी आवाज सुनाई देती है।

घूघरं

अंग्रेजी म जिस वाद्य को रटल कहते ह ऐसी भिन्न-भिन्न रेटल्स बहत-सी आदिवासी जनजातियां ने बनाई की ह। इन सभी को हम घूँघरं परिवार का ही वाद्य कहते ह।

भवाई को केवल एक ही समाज के लोग नहीं करते है। भवाई लोग कही आजीविका का साधन भी माना गया है। भवाई के तरगड़ा कनबी म कोडी खेलते है। तरगड़ा जनोई पहने होते है, जब भवाया जनोई को नहीं पहनते है। उनका पोशाक पघाडी केडीयू, चोरनी होती है। शाखा रजपूत और गामशाख दोनां देखने मिलते है।

तरागाड़ा, भवाया चारण देव और मुसलिम इस तरह भवाई के अलग अलग वग भवाई खेलते है। सभी म फक होता है।

भवाई को अगर हम विस्तार से देखे तो पता चलता है उसका इतिहास बहत ही बृहद है। भवाई लोक नाट्य का यह समान्य परिचय दिया गया है।

निष्कष

तीसरे अध्याय म लोक नाट्य भवाई का समान्य रूप से परिचय दिया है। भवाई का इतिहास बहत ही बृहद माना जाता है। असाइत जी ने जिस तरह से भवाई को रचना को उसका भी निरूपण दिया गया है। भवाई के स्वरूप जो वेश के मध्यम से होते है अगर भवाई म वेश नहीं होता तो भवाई का कोई अथ ही नहीं होता है। भवाई एक सामाजिक लोक नाट्य का मध्यम ही माना जाता है। उसके अतिरेक भवाई म भी कही सारे वेश आते है वह हमारे धम से जुड़े होते है। भवाई को भागों म विभाजित करके पारंपरिक एवं आधुनिक भवाई को चचा कराते उसम उपयोग होते वाद्य को भी चचा का विषय बना है। भवाई गुजरात के साथ साथ उसका समान स्वरूप भी हम अन्य लोक नाट्य म मिल जाता है उसको थोड़ी सी चचा को है।

संदर्भ

(१) गुजरात नुं लोकनाट्यः भवाई, रतिलाल सां.नायक पृ.कृष्णाकांत मद्रासी आदर्श प्रकाशन अभदावाद पृ २१

(२) आपणुं लोकनाट्य भवाई जवनलाल परमार ,प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट पृ.५२

(३) आपणुं लोकनाट्य भवाई जवनलाल परमार ,प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट पृ.५३

(४) आपणुं लोकनाट्य भवाई जवनलाल परमार ,प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट पृ.५३

(५) आपणुं लोकनाट्य भवाई जवनलाल परमार ,प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट पृ.५६

(६) आपणुं लोकनाट्य भवाई जवनलाल परमार ,प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट पृ.५६

(७) आपणुं लोकनाट्य भवाई जवनलाल परमार ,प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट पृ.५७

(८) आपणुं लोकनाट्य भवाई जवनलाल परमार ,प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट पृ.५८

(९) गुजरातनुं लोकनाट्य:भवाई,भवाई वेशो साथे, रतिलाल सो.नायक प्र.आदर्श, अहमदावाद.पृ५

(१०) गुजरातनुं लोकनाट्य:भवाई,भवाई वेशो साथे, रतिलाल सो.नायक प्र.आदर्श, अहमदावाद.पृ५

(११) गुजरातनुं लोकनाट्य:भवाई,भवाई वेशो साथे, रतिलाल सो.नायक प्र.आदर्श, अहमदावाद.पृ७

(१२) गुजरातनुं लोकनाट्य:भवाई,भवाई वेशो साथे, रतिलाल सो.नायक प्र.आदर्श, अहमदावाद.पृ७

(१३) गुजरातनुं लोकनाट्य:भवाई,भवाई वेशो साथे, रतिलाल सो.नायक प्र.आदर्श, अहमदावाद.पृ८

(१४) गुजरातनुं लोकनाट्य:भवाई,भवाई वेशो साथे, रतिलाल सो.नायक प्र.आदर्श, अहमदावाद.पृ२३

(१५) भवाई संग्रह कर्ता महिपतराम रुपराम सं,दिनकर भोजक गुजरात साहित्य अकादनो,गांधीनगर पृ.२९

(१६) भवाई संग्रह कर्ता महिपतराम रुपराम सं,दिनकर भोजक गुजरात साहित्य अकादनो,गांधीनगर पृ.३०

(१७) भवाई संग्रह कर्ता महिपतराम रुपराम सं,दिनकर भोजक गुजरात साहित्य अकादनो,गांधीनगर पृ.३०

(१८) भवाई संग्रह कर्ता महिपतराम रुपराम सं,दिनकर भोजक गुजरात साहित्य अकादनो,गांधीनगर पृ.३०

(१९) **भवाई संग्रह कर्ता महिपतराम रुपराम सं,दिनकर भोजक गुजरात साहित्य अकादनो,गांधीनगर पृ.३१**

(२०) **भवाई संग्रह कर्ता महिपतराम रुपराम सं,दिनकर भोजक गुजरात साहित्य अकादनो,गांधीनगर पृ.३१**

(२१) **भवाई संग्रह कर्ता महिपतराम रुपराम सं,दिनकर भोजक गुजरात साहित्य अकादमी,गांधीनगर पृ.३१**

(२२) **आपनुं लोकनाट्य भवाई जपलल्ल परमार प्रवीळ प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट.पृ६२**

(२३) **आपनुं लोकनाट्य भवाई जपलल्ल परमार प्रवीळ प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट.पृ६२**

(२४) **आपनुं लोकनाट्य भवाई जपलल्ल परमार प्रवीळ प्रकाशन प्रा.लि. राजकोट.पृ६३**

(२५) **गुजरातनुं लोकनाट्य भवाई पृ.१६**

(२६) **गुजरातनुं लोकनाट्य भवाई पृ.१९**

(२७) **गुजरातनुं लोकनाट्य भवाई पृ.२४**

(२८) **गुजरातनुं लोकनाट्य भवाई पृ.४२**

(२९) भवाई तत्त्व चचा, जयंत शुक्ला, अक्षरा, वडोदरा पृ. 4